Gyanvividha, Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025 : PP-292-294

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-4 (Oct.-Dec.) 2025
Page No.-292-294
©2025 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

अरविन्द कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल.

Corresponding Author :

अरविन्द कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल.

शैलेश मटियानी की कहानियों में आंचलिकता

सारांश : हिमालय की सुरम्य वादियों में स्थित उत्तराखण्ड राज्य अपनी लोक संस्कृति, भाषा, खाना-पाना खानपान और पहनावे के लिए प्रसिद्ध है। बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनाबी के मंदिरों के कारण इसे देवभूमि भी कहा जाता है। संस्कृतिक विरासत से धनी इस राज्य में अनेक साहित्यकारों का जन्म हुआ जिन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा हिन्दी साहित्य के साथ-साथ भारतीय साहित्य के विकास में अपना योगदान दिया। नई कहानी आन्दोलन के प्रमुख कथाकार शैलेश मटियानी उनमें से एक है। हिन्दी कथा साहित्य के इतिहास में प्रेमचन्द के बाद यदि किसी कथाकार का नाम आता है तो वह नाम 'शैलेश मटियानी' जी का है। 30 से अधिक कहानी संग्रह, 31 उपन्यास, 12 निबन्ध, फुटकर कवितायें जैसे विपुल साहित्य की रचना करने वाले मटियानी जो के साथ में उत्तराखण्ड का पर्वतीय अंचल और संस्कृति सर्वत्र विद्यमान है।

मुख्य शब्दः- उत्तराखण्ड, देवभूमि, अंचल, आंचलिकता, लोक देवता, जागर आदि।

प्रस्तावना : कहानी कला का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ स्वीकार किया जाता है, प्रारम्भ में यह मौलिक रूप से विद्यमान रही लेखन कला के विकास के साथ-साथ इसका लिपिबद्ध रूप प्रचलन में आया । प्रत्येक कहानी की एक निश्चित विषयवस्तुतु होती है, कहानी के परिवेश, भाषा तथा शिल्प के आधार पर उन्हें शहरीय, महानगरीय, ग्रामीण या आंचलिक कहानी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। आंचलिक कहानी उस कहानी को कहा जाता है जिसमें किसी अंचल विशेष का कथा कही गयी हो। शैलेश मटियानी की कहानियों में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ अंचल का भरपुर वर्णन किया गया है, उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल को भाषा, लोकाचार, लोक देवता, खानपान, पहनावा का वर्णन इनको कहानियों में प्रसंगानुसार सब जगह दिखायी देता है।

शैलेश मटियानी का जन्म उत्तराखण्ड को सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा के बडेहीना गांव में हुआ। बचपन में माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण इनका जीवन अभावों में बीता। में स्कुल में शिक्षा प्राप्त करने के दौरान हो कथा साहित्य की रचना करने लगे थे उनकी कहानियों में उत्तराखण्ड तथा कुमाऊँ मण्डल का पर्वतीय परिवेश सब जगह व्याप्त है। अन्य कहानीकारों के भाति इन्होंने पहाड़ों के सौन्दर्य को अपनी रचना का केन्द्र बिन्दु बनाने के बजाय इन्होंनें पहाड़ों के आंचलिक जीवन के यथार्थ को अपनी रचना का केन्द्र बिन्दु बनाया। इन्होंने पहाड़ों में व्याप्त भूखमरी, गरीबी, जाति प्रथा, छुआ-छूट, अशिक्षा, लोक विश्वास, स्त्रियों पर अत्याचार, निम्न जातियों को दुर्दशा आदि को अपने कथा साहित्य के आधार भूमि के रूप में प्रयोग किया तथा इन्हें अपनी कथा का विषय बनाया। 'चिट्ठी के चार अक्षर, अक्षर' उसने तो नहीं कहा था', 'लोक देवता', 'अर्द्धांगिनी', 'असमर्थ', 'दुरगुली', 'कालीनाग, 'डोमिनी', 'छाक" कालिया अवतार', 'परिवर्तन' 'पुरखा' काला कौआ', आदि कहानियों के मध्यम से कुमाऊँ 'पुरखा', अंचल के परिवेश को पाठक के सामने कहानी के रूप में प्रस्तुत किया।

शैलेश मटियानी की कहानियों में पर्वतीय अंचल का दृश्य और भाषा सब जगह विद्यमान है 'अन्तिम तृष्णा' कहानी में जब बरतनसिंह बोलता है-"उक्क उक्क् पेड़ में उल्टी लटकी हुई नागिन हत्त यार मर जावे तुझ समुरी पीपल के जैसे पगडण्डी का.....जैसे छिनाल औरत की पीठ पर रेशम का फुन्ना फिसल फिसल जाता है। बच्च--"[1]

इसी कहानी में जब रतनसिंह शराब के रौ में गाता है-

"लाछिमा, तेरी लाल बनैन रिटिंगे मना में -मेरि सुवना, बुरुंश जोड़ि फुलिंगे बना में।"[2]

तो कुमाऊँ के लोक संगीत का सुन्दर दृश्य हमारे सामने उपस्थित हो जाता हैं।

सुहागिनी' कहानी में पद्मावती कुमाऊँ के संस्कार गीतों के माध्यम से पाठकों को कुमाऊँ की लोकगीत गायन को संस्कृति से परिचित कराती है-

"सुवा रे, ओ सुवा !
बनखण्डी रे सुवा !
हरियो तेरी गात,
पिंडली तेरो ठूना-
बनखण्डी रे सुवा!"[3]

इसी कहानी में आगे जब उम्र अधिक हो जाने के कारण जब पद्मावती अपने से कहती है कि तुम मेरा ब्याह ताबें के कलश से करा दो तो वह रोते-रोते भगवान का नाम लेते हुए कहती है कि -

"हे राम ! हे राम ! रे राम !
रामचंद्र, अजुध्मावती।
सीतारानी मिथिलावासिनी।
ई-ई-ए- शकुना देही।"[4]

कुमाऊँ अंचल में मनाये जाने वाले त्योहारों तथा उसमें गायें जाने बाले गीतों का सुन्दर चित्रण इनकी कहानियों में प्राप्त होता है। परिवर्तन' कहानी में माध के महीने में मनाये जाने वाले 'घुघुतिया' त्यौहार जिसमें आग्रह भरे कंठ से कौवों को न्योतने की परम्परा रही है उसका चिनण इस कहानी में मिलता है- "ले कौवा पूड़ी .....हमें देना घर कुड़ी! .....काले कौवा रे, आ.....आ..... आ..... काले कौवा रे, आ.....आ.....आ।"[5]

परिवर्तन कहानी के प्रमुख पाल देबराम के बहाने पहाड़ों में व्यास ऊँचनीच और उच्च कर्ग द्वारा निम्न वर्ग पर अधिपत्य को दर्शाते हुए मरियानी जी देवराम का वर्णन करते हुए देबराम से कहलवाते है कि- "चेतराम को महतारी, इस तमाज को चिलम ससुरी को एक तरफ रख दे। परायें जाल जंजालों में फंसी हुई जिन्दगी ससुरी ऐसी पलीत होगी,

दाल-भात भी अब योकदारजी के यहाँ से लौट के ही खाऊँगा।[6] स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रभाव कुमाऊ के जन-जीवन पर भी दिखायी देने लगा है निम्न वर्ग में भी स्वतंत्रता और गाँधी जी का प्रभाव दिखायी पड़ने लगा है जिसका वर्णन करते हुए शैलेश मटियानी 'परिवर्तन' कहानी में लिखते है कि इस वातावरण में शिल्पकारों ने भैंस का खाना बन्द करना गोश्त शुरू कर दिया था, बहुत से तीन पाले के जनेऊ पहनने लगे थे और सेवा मानिये' की जगह सवर्णो को भी 'जैहिन्द' कहकर अभिवादन करने लगे थे।"[7] 'राज का सिन्दूर' कहानी में लोक देवता भूत-प्रेत व उसके प्रभाव को लालित्य के माध्यम से व्यक्त किया गया है" नदी में आजकल बाढ़ नहीं है, मगर जहाँ से नहीं पार करनी होती है वहाँ पर बहुत गहरा काला ताल बंधा हुआ है। उस मसानताल में तरह-तरह के भूत-प्रेत होने को बात गाँव भर में कही जाती है। रात अघरात नदी पार करने वालों के साथ ममान भी लग जाता है।"[8]

शैलेश मटियानी के कथा साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इनके पास कुमाऊँ के लोक संस्कृति के बारे में अत्यधिक ज्ञान है इनके साहित्य को बहुसंख्यक साहित्यकारों के मध्य विशेष पहचान मिली है इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से कुमाउनी संस्कृति को अनुपम धरोहर को अपनी रचनाओं में जीवन्त रूप से प्रस्तुत किया है।

इनको रचनाओं में अंचल विशेष से लेकर शहरी संस्कृति के पिछडे और गरीब लोगों के जीवन की सशक्त झांकी प्रस्तुत है तथा इन्होंने अंचल की संस्कृति और संस्कार को अपनी लेबनी का विषय बनाकर विश्व को इससे परिचित कराया। इस प्रकार हम कह सकते है कि मटियानी जो एक ऐसे कथाकार है जिन्होंने अपनी कलम द्वारा क्षेत्र स्तर की संस्कृति, रीति रिवाज, जाना-पान, लोक देवता आदि के संस्कार को विश्व पटल पर स्थापित कर लिया। अपने अध्ययन कक्ष में बैठा हुआ पाठक मटियानी जी को रचनाओं द्वारा घर बैठे अल्मो तथा उत्तराखण्ड के लोक संस्कृति से परिचित हो सकता है।

सन्दर्भ :

1. मटियानी, शैलेश, शैलेश मटियानी को सम्पूर्ण कहानियाँ (भाग-1), राकेश मटियानी (सम्पादक), प्रकल्प प्रकाशन, मोतीलाल नेहरू नगर (कर्नलगंज) द्वितीय संस्करण - 2008, पृष्ठ-39.
2. वही - पृष्ठ-42.
3. मटियानी, शैलेश, शैलेश मटियानी को सम्पूर्ण कहानियाँ (भाग-1), राकेश मटियानी (सम्पादक), प्रकल्प प्रकाश मोतीलाल नेहरू नगर (कर्नलगंज), द्वितीय सस्करण - 2008, पृष्ठ-64
4. वही - पृष्ठ-68.
5. वही - पृष्ठ-102.
6. वही - पृष्ठ-102.
7. वही पृष्ठ-104.
8. वही पृष्ठ-156.

•